शब्दों का जीवन

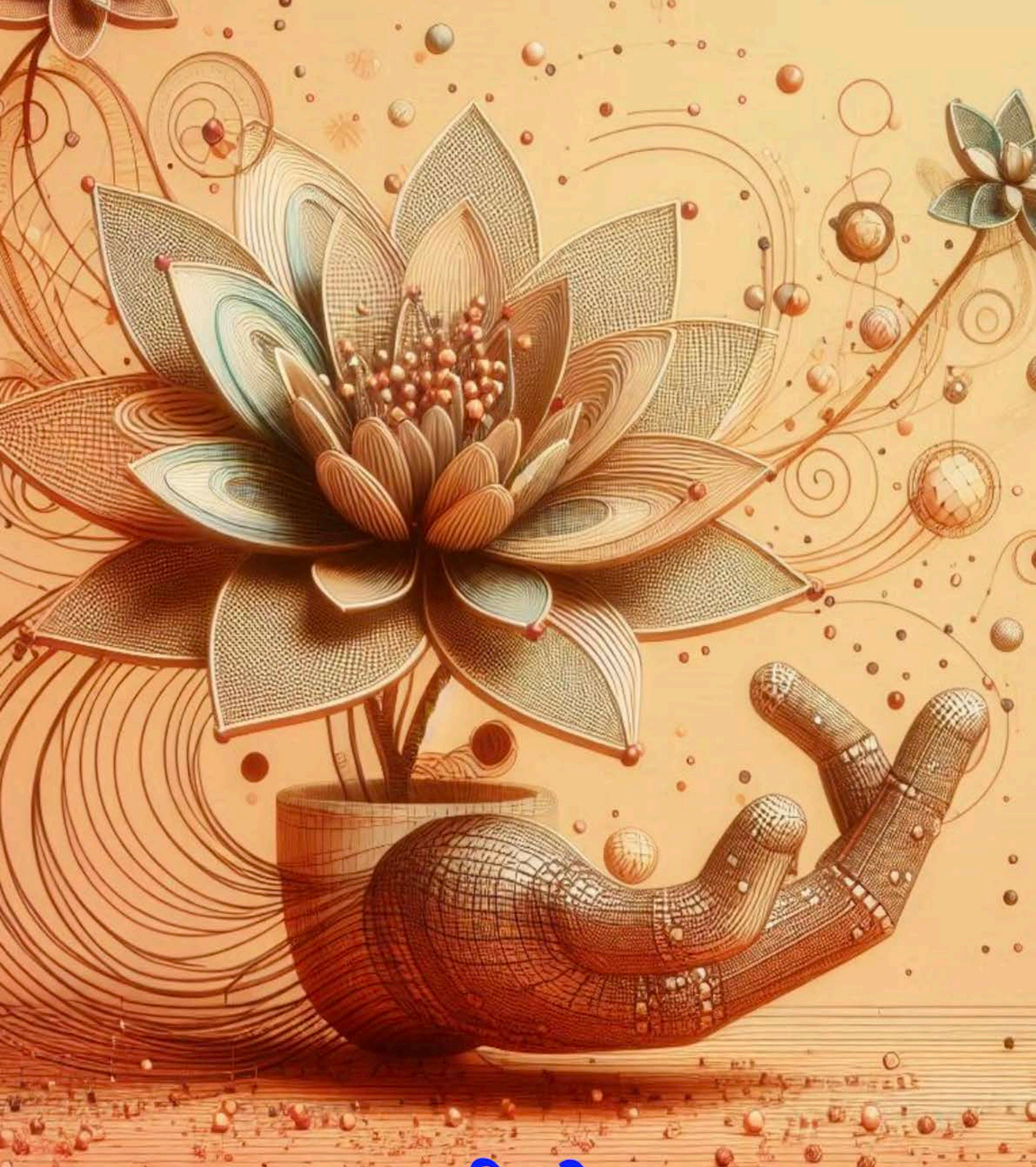

राजी सेठ

शब्दों का जीवन

(कविता संग्रह)

राजी सेठ

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2024

© राजी सेठ

आरम्भिकी

अर्थों के उजाले हेतु चरैवेति, चरैवेति…

सबका एक जीवन होता है। प्राणीवान जितने भी पृथ्वीवान हैं, सबका एक जीवन है। ‘दृश्यते अनेन इति दर्शनम्’ के आधार पर लोचनानुभूति यह स्पष्ट करती है कि जितने भी प्राणीवान पृथ्वीवान हैं, सभी का एक जीवन होता है। परंतु इसे अभिव्यक्त करने के लिए जिह्वा को एक माध्यम चाहिए, वह माध्यम ही शब्द का शब्दायित होना होता है। अर्थात् वह शब्द ही है जिसके माध्यम से हम अनुभूति को अभिव्यक्त करते हैं, यहाँ जीवनानुभूति का शब्दों से कितना तादाम्य है! तब साफ होती है कि अनुभूति के अनुसार ही शब्द शब्दायित होते हैं अर्थात् शब्दों के भी अपने जीवन होते हैं- वे हँसते हैं, रोते हैं, मुस्कराते हैं, हमारे जीवन के अंगों के साथ विनयस्त होते हैं। शब्दों के इन्हीं जीवनोपयोगी व्यवहार ने अभिनय कला को सौंदर्य प्रदान किया। तो काव्य-प्रसूता राजी सेठ शब्दों का जीवन कहती हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सृजन में शब्द ही भाव.भंगिमा, शोक.दुःख, हँसी.खुशी, उल्लास.भय और बोध की संवेदना शब्दिता में विन्यस्त होते हैं। यही तो है राजी सेठ का यह काव्य संग्रह शब्दों का जीवन!

जब जीवन की अर्थवान चुप्पी खुलती है तब मन का अंतर्द्वंद्व भयमुक्त हो जाता है। एक समय ऐसा आता है जब सम्वाद की सहोदरता की गहन अनुभूति होती है। यहीं पर मन का उच्छवास् उच्छवसित होता है- ‘कैसे मन.चीती बातें करें’! अपने ही प्रतिबिम्ब में समय का वरद-विहल-क्षण देखना धुंध-सा लगता है। यथा-

इतना क्षुब्ध व्यग्र वर्तमान

जिसमें सब जी रहे हैं

न जाने कैसा भविष्य

अनजाने बो रहे हैं

यह जीवन की वर्तमान त्रासदी है, फिर भी सर्जना के शब्द हारे.थके नहीं हैं; जीवन के साथ जीवंत भी हैं। ममता की स्त्री.चेतना पर राजी सेठ की कविता व्यक्त होती है-

अंतस् से आने वाला उत्सव का

लिखते वक्त ममता की संहिता

शब्दबद्ध किया था

'ममता की संहिता' एक नवीन बोध वात्सल्यता के हेतु! ऐसे में शब्दों का जीवन, जीवन के हर पहलू पर शब्दायित है-

अनंत प्रवाह में

प्राचीर.सा उठकर

लकीर खींचने का यत्न

यह जीवन!

काव्य परिदृश्य में राजी जी का जीवन.बोध व्यापक है। प्रस्तुत काव्य संग्रह उनकी अभिव्यंजना से आप्लावित है-

कितना भ्रामक है ज्ञान

प्रकाश की आशा के अतिरिक्त भी हो सकती है

सुरंग के बाद सुरंग

अंधेरे के बाद फिर नया अंधेरा

अस्तु, अर्थों के उजाले हेतु चरैवेति-चरैवेति…

डॉ. डी . एन. प्रसाद

वाराणसी

अर्थों के उजाले

के हेतु

उज्ज्वला को!

प्रेम की अनुभूति में उत्तरोतरता देखी जा सके जिसका सम्बन्ध जीवन के उत्तरार्द्ध-पूर्वार्द्ध वय और जिजीविषा से देखा जा सके। यह भी समझा जा सके कि जीवन के उत्तरार्द्ध में mellowness, निर्मलता, करुणा और पारदर्शीता क्यों जरूरी बन पड़ती है। इन दोनों छोरों के बीच के space में क्या है- क्या रहा, यह जीवनयोग की बात है। काव्य का परिबोध यहीं होता है!

-राजी सेठ

सूची

मेरे जाने के बाद	11
वही क्षण होना है	13
मेरा आकाश	14
मेरी सदी का आख्यान	15
वर्षगाँठ पर	17
हमारे बिना	18
...वह एक सपना ही था	20
महोत्सव	22
बिरवा बो दिया	23
वेदना परायी हुई	24
जाना है बहुत दूर	25
एहसास	26
स्मृति	27
सारा- बोध	28
...इतना ही	29
अर्थवान चुप्पी	30
जीवन की रक्ताभा	31
कितना छिन ली गई हूँ	32
अंतर्द्वंद्व	34

प्रतिमान	35
क्या तुम भी...	36
व्यवहारिकी	38
तुमने नहीं	42
कैसे मन-चीती बातें करें!	43
कभी तो कुछ बोले	47
वह स्त्री	48
ज़मीन का जिक्र बेकार है	49
स्त्री को देखती स्त्री	50
योद्धा की आस्था	52
कर उगाहने का मौसम	54
पड़ाव	56
चुपचाप	57
सेतु	59
अति परिचय	62
सम्बन्ध	63
जीवंत मोड़	64
जीवन की बयार	65
वह एक	66
जब हमने समझा	67
कल नहीं बिता	69

अपने ही प्रतिबिम्ब	71
वरद- विरल- क्षण	72
जो भीतर कहीं नहीं होता	74
न जाने कैसा भविष्य बो रहे हैं!	75
वह क्षण	76
खंड- खंड जाना	77
बाप- बरगद- और- मैं	78
आक्रान्त प्रभुतावश	80
सुप्तगर्भा रागों को स्वर दो	82
अक्षत अनुभूत	85
वह मेरा- पन	89
आकाश का कहना था	91
उतना भर	92
घर बैठी स्त्री	93
धुंध	94
देश का मन	95
लैंपपोस्ट	96
वहाँ भी थीं	97
वह मुख	98
श्वास	99
गूँगी शब्द ध्वनियों को	100

भीड़ नहीं बनना है 101

वयस्क पुत्र के नाम 102

अंधेरा 105

क्षेपक 106

श्रेय का लोभ 109

बुद्धिवाद 111

बदला बस माध्यम 113

यह जीवन 114

चौकन्नी दिशाएँ 115

दिल की तंगदस्ती 116

चरैवेति- चरैवेति 117

सागर को बाँधोगे 118

अर्थों के उजाले 119

कैदी 121

बेचैनी 128

क्या हुआ 129

प्रतीक्षा पत्र की 130

मेरे जाने के बाद

मेरे न होने के बाद भी कोई सुन सकेगा
पवन से सुगन्ध की वही बात
जो तुमने कही, मैंने सुनी।
कोई जानेगा
पुष्प पराग निहित अस्फुट स्वर
और स्निग्ध किरण.स्पर्श ढरे
तुहिन-कण की बात
जो मैंने देखी, तुमने गही।

मेरे जाने के बाद भी कोई जानेगा
वही-सार्थक समर्थ चरित्रवान-
अभेद्य तिमिर की पीड़ा-प्रखर चौंध में जो जन्मा
पूरी प्रसव वेदना के साथ
जिसे तुमने दिया, मैंने लिया।

मेरे बाद क्या
क्या उसी तरह लिखे रहेंगे

कोरी भित्तियों पर अर्थों के शिलालेख
कोई इतिहासवेत्ता सुन सकेगा
वही, वही लय गान
जिसे उन खण्डहरों में तुमने गाया, मैंने सुना।

मेरे न होने के बाद
कभी, कोई तनिक ठिठकेगा
पुष्प.पाँख स्पर्श पूर्व, असावध मसल चुकने के बाद
कौन? हाँ, कौन,
सुरक्षित रखेगा अर्थों के शिलालेख
    आकंठित लय गान
    नीरव, गुण गूँगे स्वाद!